

कक्षा सातवीं

हम पंछी उन्मुक्त गगन के (कविता)

कवि-श्री शिवमंगल सिंह सुमन

कविता का सारांश

हम पंछी उन्मुक्त गगन के माध्यम से कवि श्री शिवमंगल सिंह सुमन जी ने पिंजरे में बंद पक्षी के मन के भावों और वेदना को व्यक्त करने की कोशिश की है। स्वतंत्र रहना और स्वतंत्र जीवन जीना सभी का अधिकार है, हम किसी को बंधन में नहीं रख सकते। पिंजरे में पक्षियों को बंद रखने से हमारी पर्यावरण की आहार श्रृंखला असंतुलित होती है। बंधन किसी को भी पसंद नहीं आता है इस बात का अनुभव हम अभी लॉकडाउन के दौरान भली प्रकार कर चुके हैं। अपने परिजनों और प्रकृति से दूरी के निर्देश सभी को विचलित कर देते हैं।

कविता का भावार्थ हम पंछी उन्मुक्त गगन के

1) हम पंछी..... मैदा से ।

संदर्भ :- प्रस्तुत पाठ पाठ एक हम पंछी उन्मुक्त गगन से लिया गया है यह कविता हमारी हिंदी पाठ्य पुस्तक "वसंत" भाग 2 से ली गई है जो कक्षा सातवीं के लिए निर्धारित है । इस कविता के रचनाकार "श्री शिवमंगल सिंह सुमन जी हैं"

प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने पिंजरे में बंद पक्षी के मन के विचारों और वेदना को प्रस्तुत किया है

भावार्थ - पंछी अपनी वेदना व्यक्त करते हुए यह कह रहा है कि उसे खुले आसमान में उड़ने की आदत है । वह इस तरह पिंजरे में बंद होकर नहीं रह सकता चाहे फिर वह पिंजरा सोने का ही क्यों ना हो पूरी सुख-सुविधाओं को प्रदान करने के बाद भी किसी को भी बंधन स्वीकार नहीं है। वह इस बंधन से मुक्त होकर खुले आसमान में उड़ने पर खुश होता है इस सोने के पिंजरे से टकराकर उसके नाजुक पंख टूट जाते हैं । उसे तो निर्मल नदी का बहता स्वच्छ जल पीना ही भाता है , ऊंची उड़ान भरना अच्छा लगता है उसे नीम के कड़वे फल (निंबोली) पसंद है ना कि सोने की कटोरी में दिए गए पकवान उसे भाते हैं ।

स्वर्ण श्रंखला के दाने

संदर्भ :- प्रस्तुत पाठ 1 "हम पंछी उन्मुक्त गगन के" से लिया गया है यह कविता हमारे हिंदी पाठ्य पुस्तक "वसंत भाग 2" से ली गई है जो कक्षा सातवीं के लिए निर्धारित है इस कविता के रचनाकार शिवमंगल सिंह सुमन जी हैं

प्रसंग :- इस पद में कवि पंछी के माध्यम से यह कह रहे हैं कि उसे आसमान में असीमित उड़ान भरना है उसके सपने ही ना रह जाए प्रकृति का वितरण करने के लिए

भावार्थ :- पंछी या कह रहा है कि उसे प्रकृति का सौंदर्य दर्शन , विचरण कहीं स्वप्न ही ना रह जाए इस पिंजरे से यह संभव ना होगा । वह अपनी वास्तविक गति और उड़ान को भूल ना जाए अब तो उसे यह स्वप्न स्वरूप ही लगता है कि पेड़ की डगाल तक सबसे ऊंची उड़ान को भरना और सबसे ऊपर बैठकर झूला झूलना । कभी इतनी ऊंची उड़ान तक भरते थे कि आसमान के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंच जाते थे और सूर्य की लाल किरणों किसी अनार के दाने की तरह लगती थी और अपनी चोंच खोलकर उसे पाने की इच्छा होती थी इसी लालसा से इतनी लंबी उड़ान भरा करते थे यह स्वप्न ही ना रह जाए ।

होती सीमाहीनन डालो ।

संदर्भ :- प्रस्तुत पद पाठ 1 हम पंछी उन्मुक्त गगन से लिया गया है या कविता हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है जो कक्षा सातवीं के लिए निर्धारित है इस कविता के रचनाकार श्री शिवमंगल सिंह सुमन जी हैं

प्रसंग :- इस पद में पंछी क्षितिज से मिलन की बात कह रहे हैं चाहे फिर उसे अपनी जान ही क्यों ना देनी पड़े पर वह ऊंची उड़ान भरना चाहता है स्वतंत्र रहना चाहता है ।

भावार्थ :- इस पद में पंछी क्षितिज से मिलान की बात कह रहा है वह उड़ान भरने के लिए व्याकुल है परेशान है । वह चाहता है कि वह आसमान में अपने मित्रों के साथ प्रतिस्पर्धा करें और खेलें आनंद उठाएं । ऊंची उड़ान भरे उड़ान ऊंची है इस ऊंची उड़ान में उसके प्राण जाने की भी संभावना है उसे आश्रय (घोंसला)विराम की आवश्यकता नहीं बस वह पंख खोल कर जी भर कर उड़ान भरना चाहता है। यह पिंजरा इस बात में के लिए विघ्न है, बंधन है और वह पंछी इस बंधन से मुक्ति चाहता है स्वतंत्र रहना चाहता है। उड़ान में विघ्न इस पिंजरे में बंद होकर वह व्याकुल है और वह परेशान होकर इस बंधन से मुक्ति चाह रहा है और जी भरकर उड़ान भरना चाहता है ।